THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

सहारा लेने का क्या अर्थ है?

WHAT IT MEANS TO LEAN

www.spirituality.com Author – Susan Mack

June 23, 2008

"जो अनन्त पालनहार का सहारा लेते है, उन के लिए आज का दिन आशीषों से भरपूर है।" इस वाक्य से मेरी बेकर ऐडी ने अपना प्रमुख कार्य आरम्भ किया, सायँस एंड हैल्थ विद् की टू दि स्क्रिपचर्स (पृष्ठ vii), तथा मैं यह कह सकती हूँ कि उन वर्षों में जब मैं एक आभारी पाठिका रही, यह अमूल्य आश्वासन बार–बार मेरे मन में आया। जो भी प्रार्थना मैंने की, हर प्रार्थना की आवश्यक शुरूआत **परमेश्वर**** का सहारा लेना बन चुकी है।

विकास करते हुए, मैंने, "अनन्त पालनहार का सहारा लेने" पर विचार करना सहायक पाया, स्वंय को निजी ज़िम्मेवारी की समझ से मुक्त करने के लिए, **परमेश्वर** में अधिक सम्पूर्ण विश्वास की ओर बढ़ने के लिए। मैं स्वंय को तैरना सीखते हुए चित्रित करती हूँ, पानी में अपना सिर पीछे रखते हुए तथा यह अनुभव करते हुए कि किस तरह बायोन्सी के कानून ने मुझे बिना किसी प्रयत्न तथा सम्पूर्ण रूप से सहारा दिया। मुझे बायोन्सी के कानूनों की रचना नहीं करनी थी क्योंकि वे पहले से ही मौजूद थे। एक काम जो मुझे करना था कि उन कानूनों पर विश्वास करना था तथा उनमें आराम महसूस करना था ताकि मैं स्वतन्त्रता से चारों ओर तैर सकूँ।

मुझे यह तर्कानुसार लगता है कि सायँस एंड हैल्थ सहारा लेने के संदर्भ के साथ आरंभ होती है ताकि पाठ्कों को यह समझ आ सके कि इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे, आध्यात्मिक कानून जो कि सम्पूर्ण जगत या दिव्य सायँस को सँचालित करते हैं, के बारे में कितना भी कम जानते हों, वे उस कानून पर अधिक सम्पूर्णता से आत्मसमर्पण करके सदा उपचार प्राप्त कर सकते हैं।

जब मैं एक युवा माँ थी, "अनन्त पालनहार का सहारा लेने" से मैं ने अधिक प्रेरणा प्राप्त की। एक रात, मैं अपनी नवजात बेटी को अपनी बाहों में पकड़े हुए बच्चों के कमरे में अँधेरे में इधर–उधर झुला रही थी। मैं प्रार्थना भी कर रही थी, क्योंकि मैं चिन्तित थी कि हम किस तरह से अपने तीनों बच्चों के लिए अर्थिक व्यवस्था का प्रबन्ध करेंगे। फिर मैंने अपनी बेटी की ओर देखा, उसका मध्य रात्रि का दूध पीने का काम खत्म हो चुका था, फिर भी वह पूरी तरह जागी हुई थी तथा मेरी ओर बड़े विश्वास और सन्तोष के साथ देख रही थी। वह अपनी कोई भी ज़रूरत पूरी करने में पूर्ण रूप से असमर्थ थी फिर भी वह पूरी तरह से सन्तुष्ट तथा शान्त लग रही थी।

** जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मैंने सोचा, "अनन्त पालनहार का सहारा लेने" का यही मतलब है। यह उस प्रकार का सहारा नहीं है जिसमें आप ज़्यादा से ज़्यादा काम स्वंय से कर लेते हो जितना आप अपने आप कर सकते हो और जब आपको थोड़ी मदद या कुछ आराम की आवश्यकता पड़ती है, तब आप परमेश्वर का सहारा लेते हो। नहीं, यह आपके दिव्य माता पिता की देख–भाल तथा मार्ग दर्शन पर सम्पूर्ण आत्मसमर्पण करना है। यह इस तरह है, जैसे जीसस ने कहा, "मैं स्वंय अपने आप कुछ नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 5:30) इस ने कितना भार मेरे कंधों से हटा दिया। आने वाले महीनों तथा वर्षों में हमारे पास अपनी बेटियों को देने के लिए सदा ही पर्याप्त साधन थे।

अपने व्यवसायिक कैरियर के दौरान एक समय मुझे "अनन्त पालनहार का सहारा लेने" से मिला एक विशेष उपचार याद आता है। मैं लौसएंजलिस में एक सम्मेलन में भाषण देने के लिए तैयारी कर रही थी। तैयारी के समस्त महीनों के दौरान तथा हवाई जहाज़ में भी मैं चार घण्टे के प्रदर्शन में प्रयोग होने वाले 100 से भी अधिक पृष्ठों को सावधानी से सँभालती रही। एक सप्ताह पूर्व मुझे बहुत ज़्यादा जुकाम हो गया। प्रार्थना द्वारा सबसे बुरे लक्षण जल्दी ही लुप्त हो गए, परन्तु थोड़ी–थोड़ी खाँसी अब भी थी, जिसके लिए मैं चिन्तित थी कि वह भाषण में बाधा डालेगी।

फिर, प्रदर्शन से एक रात पहले, मैं अपने होटल की गली के दूसरी ओर एक भोजनालय में रात का खाना खाने जाने लगी। मैं प्रतिलिपि को एक जूट के फोल्डर में ले जा रही थी क्योंकि मैंने सोचा था कि भोजन की प्रतीक्षा करते हुए मैं उस पर आखिरी नज़र डालूँगी।

गली के आधे रास्ते तक, मैं लड़खड़ाई ओर फोल्डर हवा में ऊपर उछला। समुद्र से लगातार आती हुई हवा के झोंके ने ज़्यादातर पृष्ठों को पकड़ा तथा उन्हें नीचे व्यस्त सायेदार चौडे रास्ते में उड़ा दिया। जब मैंने यह पूरा दृश्य देखा, मैंने असल में हँसना शुरू कर दिया– क्योंकि मुझे उस समय जो विचार आया था वह यह था कि, "अब तुम्हे अनन्त पालनहार का ही सहारा लेना पड़ेगा न कि अपना।" मुझे बिलकुल नहीं पता था कि इसका क्या हल होगा परन्तु मैं यह जानती थी कि परमेश्वर इसे सँभाल सकता है।

दो दरबान जो कि भोजनालय के बाहर खड़े थे, उन्होंने जल्दी ही मेरी ज़रूरत देखी तथा जो भी पृष्ठ उन्हें मिले वे इकट्ठे करने के लिए इधर–उधर दौड़ने लगे, जब तक कि मैंने अपने पैरों के पास गिरे हुए पृष्ठ उठाए, उन्होंने कागजों का बिखरा हुआ ढेर मुझे प्रस्तुत किया और मैं भोजनालय में एक मेज़ पर बैठ कर पूरे बिखराव को फिर से क्रमानुसार लगाने लगी, यह भरोसा करते हुए कि परमेश्वर मेरी सहायता करेंगे, मुझे मन ही मन में दोबारा बनाने में, जो कुछ भी खो गया था। पर यह सब करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि एक भी पृष्ठ नहीं खोया था। जो चली गई, वह थी जिम्मेदारी की निजी सोच, जिसे मैंने प्रदर्शन के लिए महसूस किया था साथ ही साथ मेरी खाँसी के बारे में कोई भी चिन्ता। अगले दिन मैं जुकाम के किसी भी लक्षण से पूरी तरह मुक्त थी तथा भाषण देने के लिए अच्छी तरह से तैयार थी।

अब भी मुझे, "अनन्त पालनहार का सहारा लेने" के बारे में प्रेरणा के नए सन्देश मिल रहे हैं। हाल ही में तब मिला जब मैं भारत भ्रमण पर गई। मैं एक रिक्शा पर सवार एक पाँच लोगों के परिवार के पीछे जा रही थी जो एक ही मोटर साईकिल पर सवार थे। माँ ने अपने छोटे बच्चे को अपनी गोद में बाँह के साथ कोमलता तथा सुरक्षित रूप से बच्चे की छाती की ओर से पकड़ रखा था। जैसे मोटर साईकिल भीड़ में इधर–उधर जा रहा था, बच्चा शाँति से सोता रहा। मैंने सोचा, यही है "अनन्त पालनहार का सहारा लेना"।

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

यदि हम यह महसूस करते हैं कि हम अपनी दिनचर्या में पूरी गति से इधर–उधर दौड़ रहे हैं; परमेश्वर, मातृ – प्रेम सुरक्षा से हमारी देखभाल कर रहा है।

हम पूरी तरह से आश्वासित हो सकते हैं कि उस छोटे बच्चे की तरह हम भी उतनी ही शान्ति तथा विश्राम को अनुभव कर सकते हैं।

सायँस एंड हैल्थ उन पुस्तकों में से एक है जो कि मुझे कारण देती है यह प्रशंसा करने के लिए कि किस तरह इसका हर संक्षिप्त वचन एक सम्भावित मूल कारण है प्रेरणा तथा उपचार का। पुस्तक के कई बार संशोधन द्वारा, मेरी बेकर ऐडी हर एक वाक्य के स्थान के साथ बहुत सावधान तथा सचेत थी। इस प्रकार यह आश्चर्यजनक नहीं है कि प्रथम वाक्य परमेश्वर के साथ शुरू होता है। *अनन्त पालनहार का सहारा लेना।* कुछ भी तथा हर कार्य को आरम्भ करने का कितना अद्‌भुत तरीका है।

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.